UNIT-2

* एक संतुलित तथा संदर्भयुक्त ईसीसीई पाठ्यचर्या की समझ →

→ बच्चों के जीवन के प्रथम छह वर्ष मानव जीवन के विकास के मुख्य स्तम्भ है जिसमें जीवन के विकास का सर्वाधिक तेजी से उभार होता है। इन वर्षों में मानव मस्तिष्क का तेजी से विकास होता है। ECCE ने बच्चों के विकास में काफी सराहनीय योगदान दिया है। बच्चे का समग्र एवं सर्वांगीण विकास हो सके। ECCE के अन्तर्गत पाठ्यचर्या में बच्चों के समग्र विकास हेतु निम्न तथ्यों पर जोड़ दिया है।

(1.) शारीरिक तथा गामक विकास → गामक कौशल, मांसपेशियों का समन्वय, आँख एवं हाथ का समन्वय, संतुलन का ज्ञान, शारीरिक समन्वय, स्पेश एवं दिशा की जागरुकता, पोषण, स्वास्थ्य स्थिति

(2.) भाषा विकास → सुनना, बोलना एवं वार्तालाप का कौशल, शब्द भण्डार, अक्षरों एवं शब्दों के उच्चारण, अक्षरों की पहचान, शब्दों एवं वाक्यों का निर्माण प्रारंभिक लेखन, विद्यालय में भाषा का परिचय।

(3.) संज्ञानात्मक अथवा मानसिक विकास → कई संकल्पनाओं का विकास तथा प्री-संख्या तथा संख्या, गिनती, सामाजिक सम्बन्ध, समूह वार्तालाप इत्यादि।

(4.) सामाजिक - वैयक्तिक तथा संवेगात्मक विकास → स्वयं से संबंधित संकल्पना का विकास, आदतों का निर्माण, उत्सुकता, सहयोग, सामाजिक सम्बन्ध, Pro-Social behaviour अपने अनुभवों को शेयर करना

(5.) ज्ञानेन्द्रियाँ विकास → पाँचों ज्ञानेन्द्रियों का विकास

(6) सृजनशीलता तथा सौन्दर्य का बोध → विभिन्न कलाओं की खोज, नृत्य, नाटक तथा संगीत गतिविधियों का ज्ञान

(7) ECCE एक संतुलित कार्यक्रम है जिसमें भाषागत, संवेगात्मक, सृजन एवं गामक आधारित गतिविधियों पर जोर दिया जाता है। यह सिर्फ यह बाल केन्द्रित कार्यक्रम है जो प्रत्येक बच्चे के

Scanned by CamScanner
Scanned with CamScanner

अधिगम एवं सांवेगिक जरूरतों को पूरा करती है इसके लिए विभिन्न तरह की रोचक एवं आनन्दमयी गतिविधियाँ आयोजित करती है। यह सिर्फ औपचारिक केन्द्रीकृत शिक्षक केन्द्रित कार्यक्रम या एप्रोच नहीं है। यह कार्यक्रम बच्चों लिखने, पढ़ने एवं गणितीय गणनाओं के लिए तैयार करती है। ECCE कार्यक्रम बच्चों के समग्र विकास को सुनिश्चित करती है। यह बच्चों के पर्याप्त देखभाल, पोषण पर फोकस करती है।

* ECCE पाठ्यचर्या के लघु एवं दीर्घकालिक उद्देश्य तथा नियोजन :⇒

⇒ ECCE पाठ्यचर्या के लघु उद्देश्य -

(1.) स्वस्थ आदतें डालना - बच्चे में अच्छी आदतें डालना और व्यक्तिगत अनुकूलन के लिए जरूरी बुनियादी योग्यता पैदा करना

(2.) वांछनीय सामाजिक अभिवृत्तियों का विकास - वांछनीय सामाजिक अभिवृत्तियाँ और शिष्टाचार विकसित करना तथा स्वस्थ सामूहिक भागीदारी को प्रोत्साहित करना।

(3.) अनुभूतियों और संवेगों के विकास के लिए मार्ग दर्शन - बच्चे को अपनी अनुभूतियों और संवेगों को अभिव्यक्त करने, समझने, मानने और नियंत्रित करने में मार्गदर्शन देकर संवेगों के मामले में क्षमता को विकसित करना।

(4.) सौन्दर्य - बोध → सौन्दर्य बोध को जगाना।

(5.) आपस की दुनिया समझने में मदद करना - परिवेश के बारे में बौद्धिक जिज्ञासा की शुरुआत को प्रेरित करना।

(6.) आत्माभिव्यक्ति को प्रोत्साहन → बच्चे को आत्माभिव्यक्ति के काफी अवसर देकर स्वतन्त्रता और सृजनशीलता के लिए प्रोत्साहित है।

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

दीर्घकालिक उद्देश्य :-

(1.) बच्चों के समग्र विकास का उन्नयन करना।
(2.) बच्चों को औपचारिक स्कूल के लिए तैयार करना।
(3.) प्राथमिक शिक्षा के सर्वव्यापीकरण के लिए योगदान देना।
(4.) प्राथमिक शिक्षा के अवरोधों को कम करना।
(5.) विभिन्न विकल्पों के साथ pre schooling पर जोर देना।

(6.) विभिन्न विकल्पों के साथ ECCE के विभिन्न Degree पर देना जिससे ज्यादा-से-ज्यादा लोग लाभान्वित हो सकें।

(7.) संविधान के अनुच्छेद 45 के अन्तर्गत भारत के विभिन्न राज्यों में ECCE के लिए व्यापक प्रयास करने के लिए जोर देना।

(8.) सर्वशिक्षा अभियान के तहत चल रहे 73860 ECCE केन्द्रों का उन्नयन करना।

(9.) छह वर्ष तक के बच्चों के पूरक कोण पोषण की व्यवस्था।

(10.) समय-समय पर बच्चों के स्वास्थ्य परीक्षण।

(11.) इन बच्चों के टीकाकरण की सुविधा।

(12.) Pre School and Primary School को जोड़ने का काम

(13.) विभिन्न तरह के शैक्षिक गतिविधियों के कार्यान्वयन पर जोर जैसे यथा कहानी कहना एवं सुनना, कविता पाठ, गाना गान, रंग एवं आकारों की बोध, समूह कार्य, अच्छी आदतों का निर्माण।

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

* गतिविधियों के आयोजन के लिए विभिन्न विधियों प्रक्रियाओं का चयन :⇒

⇒ राष्ट्रीय नीति 1986 में यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि पूर्व प्राथमिक कक्षाओं के लिए ऐसा कार्यक्रम बनाना चाहिए जो उनकी मूलभूत आवश्यकताओं के अनुसार हो एवं जिससे उनमें सर्वांगीण विकास हो सके। अध्यापक को कोई भी गतिविधियाँ कराने से पहले इन बातों का ध्यान रखना चाहिए।

(1) पूर्व प्राथमिक स्कूल कार्यक्रम बनाते समय इस बात का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए कि वह कार्यक्रम बालकों की उम्र, मानसिक स्तर एवं आवश्यकताओं के अनुरूप हो।

(2) बालकों को ऐसी क्रियाएँ अवश्य करायी जानी चाहिए जिनमें वह अपने छोटे-छोटे कार्य स्वयं करने के लिए अभ्यस्त हो।

(3) खेल क्रियाएँ अर्थपूर्ण होने चाहिए। कार्यक्रम का आयोजन करते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि जो भी खेल क्रियाएँ आयोजित की जायें, वह अर्थपूर्ण हो।

(4) विषयों में सहसम्बन्ध होना चाहिए अर्थात् जिन विषयों का चयन कार्यक्रम नियोजन के अन्तर्गत पढ़ाये जाने के लिए किया गया हो उनमें आपस में सहसम्बन्ध हो।

(5) योजना दैनिक जीवन के व्यवहारिक जीवन पर आधारित होना चाहिए। अधिगम अनुभव हेतु विषयवस्तु का चयन बालकों की दैनिक जीवन की आवश्यकता पर आधारित हो।

(6) अधिगम यदि रुचिकर हो तभी वह प्रभावकारी हो सकता है।

(7) बालकों में अंधविश्वास न पनपे अपितु सत्य के प्रति निष्ठा एवं कार्य के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास हो।

(8) कार्यक्रम नियोजन में लचीलापन होना चाहिए हमारी सामाजिक व्यवस्था व आसपास के वातावरण में आए परिवर्तन को इस कार्यक्रम में भी परिवर्तन किया जा सके।

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

कार्यक्रम नियोजन करते समय यदि हम उपरोक्त नियमों का पालन करें तभी वह कार्यक्रम बालकों के सर्वांगीण विकास में सहायक होगा। साथ-साथ कुछ नियमों का पालन आवश्यक है जिससे वह क्रियाएँ अध्यापक के उद्देश्य एवं बालक के सर्वांगीण विकास की प्राप्ति में सहायक सिद्ध हो सकें। शान्त एवं चंचल दोनों प्रकार की क्रियाओं को उचित समय व स्थान पर कार्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए जिससे बालक जब चंचल क्रियाओं द्वारा थक जायें तो शान्ति क्रियाओं में आराम से ज्ञान प्राप्त कर सकें। इसलिए शैक्षिक परिभ्रमण को कार्यक्रम नियोजन में उचित स्थान दिया जाना चाहिए। इससे बालकों में सामाजिक मूल्यों का भी विकास होता है।

* कक्षा में विकासोनुकूल, बाल केन्द्रित तथा समावेशी वातावरण निर्माण ⇒

⇒ कक्षा को विकासोनुकूल, बाल केन्द्रित तथा समावेशी वातावरण निर्माण करने के कुछ मुख्य प्रावधान हैं।

(1.) विशेष कक्षाएँ → ऐसी कक्षाओं तथा विषयों में जहाँ बालकों की संख्याएँ अधिक होती हैं उन्हें उन्हें सामान्य बालकों के साथ पढ़ाना लाभप्रद नहीं हो सकता है। बल्कि निरन्तर असफलता से ये बालक मनोवैज्ञानिक हीनता के शिकार हो जाते हैं। इससे पहले की कक्षा में लगातार फेल हो उनके लिए पृथक कक्षा की व्यवस्था सामान्य विद्यालयों में कर दी जानी चाहिए।

(2.) विशेष विद्यालय → ऐसे पिछड़े बालकों को संख्या में रखा जाता है जो विशिष्ट बालक के रूप में आते हैं। इन सबों के लिए एक विशेष विद्यालयों की व्यवस्था करना ही न्यायोचित रहता है, क्योंकि उनकी अक्षमता इस स्तर की होती है कि वे सामान्य रूप से प्रयोग में आने वाली शिक्षण सामग्री द्वारा शिक्षित नहीं किये जा सकते हैं। मानसिक न्यूनता व शारीरिक विकलांगता वाले बालकों

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

के लिए पृथक - पृथक विद्यालय होते हैं। विशिष्ट प्रभाव वाले बालकों को जिन्हें शिक्षित नहीं किया जा सकता है। ऐसे बालकों को व्यवसायों का प्रशिक्षण दिया जाता है। जिससे वे समाज का बोझ न बनें।

(3.) विशिष्ट पाठ्यक्रम :- सामान्य रूप से पाठ्यक्रम का निर्माण औसत क्षमता वाले बालकों की आवश्यकता को दृष्टिगत रखते हुए किया जाता है। पिछड़े बालक पाठ्यक्रम को कुशलतापूर्वक करने में असफल रहते हैं। अतः उनके लिए सरल एवं छोटे पाठ्यक्रमों का, जो उनकी अपनी व्यक्तिगत आवश्यकताओं व रुचियों के अनुरूप हों, निर्धारण करना उपयोगी रहता है।

(4.) शिक्षण विधियाँ :- इन शिक्षण के विधियों में पर्याप्त परिमार्जन की आवश्यकता होती है। इन्हें स्थूल सामग्री और प्रत्यक्ष अनुभवों की सहायता लेकर तथा विषय-वस्तु को छोटी-छोटी इकाइयों में बाँटकर सरल तरीकों से पढ़ाया जाना चाहिए। सांवेगिक अथवा अन्य कारणों से पिछड़ जाने वाले बालकों के लिए अभिनय, प्रोजेक्ट विधि, खेल विधि आदि नवीन शिक्षण विधियों का प्रयोग इस उपचारात्मक शिक्षण में विशेष महत्व रखता है।

(5.) विशेष अध्यापक :-

(a) पाठ्यान्तर क्रियाएँ, विविध अनुभव तथा वर्गीकृत पाठ्यक्रम

(b) समय सारणी

(c) परीक्षा प्रणाली

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner